PAPER-III
SANSKRIT

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________
2. (Signature) __________________________
   (Name) ____________________________

Roll No. | | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No.________________________________

(In words)

D 2 5 1 0

Time : 2 1/2 hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
9. किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

SANSKRIT

संस्कृत

PAPER – III

प्रश्नपत्र – III

प्रश्नपत्रम् – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein. **All questions should be attempted only in Sanskrit language.**

नोट : **सभी प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा में ही देना है** । यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं **चार (4)** खण्डों में विभक्त है । परीक्षार्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अन्दर यथास्थान दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

सूचना : अस्य प्रश्नपत्रस्य **द्विशतम् (200)** अङ्का: सन्ति । प्रश्नपत्रमिदं **चतुर्षु (4)** खण्डेषु विभक्तमस्ति । **सर्वेषां प्रश्नानामुत्तरं संस्कृतभाषायामेव देयम्** । अभ्यर्थिभि: पृथक् निर्दिष्टं विशेषसूचनानुसारं खण्डान्तर्गतप्रश्ना: समाधेया: ।

SECTION – I

खंड – I

खण्ड: – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 marks)**

नोट : इस खंड में विकल्प सहित **बीस-बीस** (20) अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । दोनों प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ** (500) शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

सूचना : अस्मिन् खण्डे **द्वौ** विकल्पसहितौ निबन्धात्मकौ प्रश्नौ स्त: । प्रश्नद्वयमेव समाधेयम् । एकैकस्य प्रश्नस्य **प्रायश:** (500) पञ्चशतशब्दपरिमितम् उत्तरं देयम् । **(2 × 20 = 40 अङ्का:)**

ऐच्छिक: – I

1. देवानामाकारं यास्कदिशा विमृशत ।

अथवा

उषस्सूक्तमनुसृत्य प्रकृते: लोकोपकारकं स्वरूपं विमृश्यताम् ।

2. वेदस्य कालनिर्णये प्राचीनविदुषाम् अभिप्रायानाविष्कुरुत ।

अथवा

ब्राह्मणलक्षणं विलिख्य सोदाहरणं विवेचनं कुरुत ।

ऐच्छिक: – II

1. व्याकरणपदार्थ: विविच्यताम् ।

अथवा

शब्दार्थसम्बन्धस्वरूपं निरूप्यताम् ।

2. पतञ्जले: देशकालादि-परिचय: प्रस्तूयताम् ।

अथवा

वेदाङ्गेषु व्याकरणस्य महत्त्वं प्रतिपाद्यताम् ।

ऐच्छिक: – III

1. न्यायशास्त्रानुसारेण अनुमानप्रमाणं सभेदं निरूप्यताम् ।

अथवा

सांख्यसम्मत: सत्कार्यवाद: प्रसाध्यताम् ।

2. योगशास्त्रसम्मतं समाधिद्वयं व्याख्यायताम् ।

अथवा

अद्वैतवेदान्ताभिमत: मायावाद: स्पष्टीक्रियताम् ।

ऐच्छिक: – IV

1. रससूत्रव्याख्याने मतभेदान् विवृणुत ।

   अथवा

   पण्डितराजदिशा काव्यप्रभेदान् सोदाहरणं विशदयत ।

2. मम्मटानुसारेण काव्यप्रयोजनस्य समीक्षां कुरुत ।

   अथवा

   भारवेरर्थगौरवं सोदाहरणं विवेचयत ।

ऐच्छिक: – V

1. पुलकेशिद्वितीयस्य ऐहोलशिलालेखस्य महत्त्वं प्रकाशयत ।

   अथवा

   भारते लेखनकलाया: प्राचीनत्वं विमृशत ।

2. समुद्रगुप्तस्य इलाहाबादस्तम्भलेखस्य वैशिष्ट्यं लिखत ।

   अथवा

   रुद्रदाम्न: गिरनारशिलालेखस्य ऐतिहासिकं महत्त्वं प्रकाशयत ।

SECTION – II
खंड – II
खण्ड: – II

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only one elective/specialization and answer all the three questions from it. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 marks)**

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता से **तीन** (3) प्रश्न हैं । परीक्षार्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई / विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह** (15) अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ** (300) शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

सूचना : अस्मिन् खण्डे एकैकस्मिन् ऐच्छिकविषये **त्रय: त्रय:** (3) प्रश्ना: सन्ति । एकम् ऐच्छिकं विषयं चित्वा परीक्षार्थिना तस्य त्रय: प्रश्ना: समाधेय: । एकैकस्य प्रश्नस्य **पञ्चदश** (15) अङ्का: सन्ति । उत्तरं तावत् प्रायश: **शतत्रय** (300) शब्दात्मकं लेखनीयम् । **(3 × 15 = 45 अङ्का:)**

ऐच्छिक: – I

3. समानाक्षर: । रिफित: । प्रगृह्यम् । सोष्म: । स्वरभक्ति: । एषां प्रातिशाख्यानुसारं सोदाहरणं विवेचनं कुरुत ।
4. मन्त्रशब्दं निरुच्य मन्त्राणां वैविध्यं सोदाहरणं प्रतिपादयत ।
5. पर्यावरणसंरक्षणे वरुणसूक्तस्य महत्त्वं निरूप्यताम् ।

ऐच्छिक: – II

3. अव्ययीभावसमासं सोदाहरणं स्पष्टीकुरुत ।
4. पाणिनीयशिक्षानुसारेण वर्णोत्पत्तिविधि: व्याख्यायताम् ।
5. वाक्यपदीयानुसारेण शब्दब्रह्मण: स्वरूपं स्पष्टीकुरुत ।

ऐच्छिक: – III

3. प्रत्यक्षस्य न्यायमते निर्विकल्पक-सविकल्पकभेदौ व्याख्यायेताम् ।
4. सांख्यमतेन पुरुषबहुत्वसाधका: हेतव: निरूप्यन्ताम् ।
5. योगशास्त्रे योगाङ्गानि विविच्यन्ताम् ।

ऐच्छिक: – IV

3. राजशेखरानुसारं काव्यपुरुषस्वरूपं निरूपयत ।
4. असंलक्ष्यक्रमध्वने: प्रभेदान् सोदाहरणं विशदयत ।
5. शान्तरसस्याभिनेयत्वं पण्डितराजदिशा विवृणुत ।

ऐच्छिक: – V

3. गुप्तोत्तरकालीनशिलालेखानां महत्त्वं पर्यालोचयत ।
4. अशोकस्य प्रमुखस्तम्भलेखानां परिचयो देय: ।
5. कनिष्ककालीन (वर्ष 3) सारनाथबौद्धप्रतिमालेखस्य महत्त्वं निरूपयत ।

SECTION – III
खंड – III
खण्ड: – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस** (10-10) अंकों के **नौ** (9) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास** (50) शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

सूचना : अस्मिन् खण्डे **दशाङ्क** (10) परिमिता: **नव** (9) प्रश्ना: सन्ति । एकैकस्य प्रश्नस्य उत्तरं तावत् प्रायश: **पञ्चाशत्** (50) शब्दात्मकं देयम् । **(9 × 10 = 90 अङ्का:)**

6. वाक्-सूक्तस्य प्रतिपाद्यं स्वदेवगिरा लिखत ।

7. अध्यास्ते वैकुण्ठं हरिः ।
अध्ययनेन वसति ।
.......ससूत्रं विभक्तिं स्पष्टीकुरुत ।

8. 'जन्माद्यस्य यतः' – सूत्रं व्याख्यायताम् ।

9. धर्मशास्त्रे व्यवहारशब्दस्य कोऽर्थः ?

10. 'पुराणंपञ्चलक्षणम्' – स्पष्टीकुरुत ।

11. अस्य श्लोकस्य व्याख्या कार्या –

रथाङ्गपाणे: पटलेन रोचिषामृषित्विष: संवलिता विरेजिरे ।
चलत्पलाशान्तरगोचरास्तरोस्तुषारमूर्तेरिव नक्तमंशव: ।।

12. विभावनालङ्कारस्य सोदाहरणं लक्षणं विशदयत ।

13. निरुक्तप्रयोजनं प्रतिपाद्यताम् ।

14. अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम् ।
विवर्त्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यत: ।।
– व्याख्यायताम् इयं कारिका ।

SECTION – IV

खंड – IV

खण्डः – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच** (5) प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस** (30) शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच** (5) अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

सूचना : अस्मिन् खण्डे निम्नलिखितं गद्यभागमाश्रित्य **पञ्च** (5) प्रश्नाः सन्ति । एकैकस्य प्रश्नस्य प्रायशः **त्रिंशत्** (30) शब्दात्मकम् उत्तरं देयम् । एकैकस्य प्रश्नस्य कृते **पञ्च** (5) अङ्काः सन्ति ।

(5 × 5 = 25 अङ्काः)

'अस्ति कस्मिंश्चिद्वनोद्देशे मदोत्कटो नाम सिंहः । तस्य सेवकास्त्रयः काको व्याघ्रो जम्बुकश्च । अथ तैर्भ्रमद्भिः कश्चिदुष्ट्रो दृष्टः पृष्टश्च – 'कुतो भवानागतः सार्थाद्भ्रष्टः ?' । स चात्मवृत्तान्तमकथयत् । ततस्तैर्नीत्वा सिंहेऽसौ समर्पितः । तेनाभयवाचं दत्त्वा चित्रकर्ण इति नाम कृत्वा स्थापितः । अथ कदाचित्सिंहस्य शरीरवैकल्याद् भूरिवृष्टिकारणाच्चाहारमलभमानास्ते व्यग्रा बभूवुः । ततस्तैरालोचितम् – 'चित्रकर्णमेव यथा स्वामी व्यापादयति तथाऽनुष्ठीयताम् । किमनेन कण्टकभुजा ?' व्याघ्र उवाच – 'स्वामिनाऽभयवाचं दत्त्वाऽनुगृहीतस्तत्कथमेवं संभवति ?' । काको ब्रूतेइह समये परिक्षीणः स्वामी पापमपि करिष्यति । यतः –

त्यजेत् क्षुधार्ता महिला स्वपुत्रं,
खादेत् क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम् ।
बुभुक्षितः किं न करोति पापं ?
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ।।

15. मदोत्कटः कः ? के च तस्य सेवकाः ?

16. चित्रकर्ण इति कस्य नाम ? स कथं संप्राप्त: ?

17. ते सिंहसेवका: कथं व्यग्रा बभूवु: ?

18. व्याघ्रकाकसंलापस्य विवरणं प्रदेयम् ।

19. ‘बुभुक्षित: किं न करोति पापम् ’ – इत्यस्य क आशय: ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) ....

(in figures) ....

Signature & Name of the Coordinator ....

(Evaluation) Date ....